16 खेमा

बाल-मजदूरी की नृशंसता को उभारने वाली कहानी खेमा हमें बाल श्रमिकों के प्रति संवेदनशील बनाती है। बाल अधिकारों की अवधारणा समकालीन विमर्श का महत्त्वपूर्ण गद्य है, कहानी इसके प्रति भी हमें जागरूक बनाती है।

P3JMB1

गली के नुक्कड़ पर बिना नाम की एक चालू और अस्थाई होटल। टूटी-सी टेबल पर चाय बनाने के लिए भट्ठी के साथ लगा लाल पंखा। पास ही दीवार से सटे एक टेबल पर आठ-दस लीटर दूध से भरा एल्युमीनियम का भगोना और चाय, शक्कर के डिब्बे। एक छींका जिसमें आठ-दस गिलास रखे हैं।

इस 'मुक्ताकाशी' होटल का मालिक कसारा अपने काम को हल्का करने के लिए पास के किसी गाँव से एक बालक को ले आया। कुछ तुतलाते बोलते इस बालक का नाम था, खेमा। यह लगभग आठ-नौ वर्ष का दिखाई पड़ता था, उसका रंग गेहुँआ था। कद लगभग साढ़े तीन फुट, ख़ाकी निकर के साथ पैबन्द लगी कमीज़ पहने था। दूध के दाँत अभी पूरे गिरे नहीं और चढ़ने लगा खेमा रोजगार की पहली पायदान पर।

सुबह की ग्राहकी के समय कसारा चाय बनाता और खेमा गिलासों को ग्राहकों को दे आता। फिर अपनी नन्हीं अंगुलियों के बीच चार-पाँच गिलासों को उठाकर टंकी पर धोने ले जाता। खेमा गिलासों में पानी डालकर उलट देता और धुले गिलासों को टेबल पर रखे छींके में पंजों के बल खड़ा होकर जमा देता। यह क्रम उसकी नियति बन गया था।

''ऐ रे खेमा, ये डायरी ले जा और लिखवा ला, तीन साइकल वाले के, दो मास्टर साहब के, पाँच सेठजी के'', कसारा ने खेमा को आदेशात्मक स्वर में कहा।

''हाँ काका, अभी लेकर जाता हूँ।'' चाय के साथ खेमा डायरी लेकर चल पड़ा। आठ-दस मिनट बाद घूमता-घामता खेमा डायरी लेकर आया। वह सम्भवतः समझने लगा था कि दुकान पर जाते ही फिर पिलना है।

''इतनी देर कहाँ रहा रे खेमा ? कसारा ने खेमा को झिड़कते हुए पूछा। ''वो....... वो, मास्साब दुकान पर नहीं थे।'' खेमा सफ़ेद झूठ बोल गया। कुछ समय बाद खेमा उठा और गिलास धोने लगा।

जब होटल पर चाय पीने वाले इक्के-दुक्के लोग रह गए तब खेमा ने अपने सेठ कसारा से कहा, ''मेरे पैर जलते हैं, चप्पल ला दो काका...........।''

''अभी रख दूँगा चप्पलें सिर पर, चल अपना काम कर, बड़ा आया चप्पलें पहनने वाला।''

खेमा निराश हो गया। अप्रैल का महीना था। धूप गहराने लगी थी। नंगे पैर खेमा इधर कोल्हू के बैल की तरह घूमता रहता। जूठे गिलास धोने जाता तो पहले अपने पैर धोता। शायद जलते पैरों पर पानी गिरने से खेमा को क्षणिक तसल्ली मिलती थी।

काम निपटा कर..........कसारा रोटी खाने बैठा। दो रोटी, प्याज और चटनी लेकर खाना खाने लगा। खेमा भी इसी टोह में था कि अब खाना मिल जाए। इस बीच आठ-दस लोग बेंचों पर आ बैठे। कसारा हाथ धोकर चाय बनाने लगा। खेमा का उतरा चेहरा देखा नहीं जाता था।

खेमा ग्राहकों को चाय देता, पानी पिलाता और ग्राहकों के आदेश पर बीड़ी-सिगरेट भी ले आता था। रोज़ाना चाय पीने वाले ग्राहक खेमा को भद्दी गालियाँ देकर पुकारते और खेमा डरा, सहमा, मुस्कुराता हुआ अपने काम में लगा रहता। हाँ, कनखियों से अपने नियमित ग्राहकों पर एक-दो बार नजर जरूर डाल लेता था क्योंकि उनसे जान-पहचान हो गई थी।

'ऐ रे खेमा' कहकर रोटी की तरफ इशारा करके कसारा पास के बरामदे में दोपहर की झपकी लेने लगा। खेमा ने भी अपना पेट भरा। उसको भी थकान के मारे नींद आने लगी।

कसारा के सोते भला खेमा कैसे आराम कर सकता था? गर्म हवा सहता, थकान का मारा खेमा बैठे-बैठे झपकियाँ ले लेता। कभी सिर पास की दीवार से टकरा जाता तो वह मुँह की लार हथेली से साफ करके उठ बैठता और कसारा की तरफ देखता।

होटल के पास क्लिनिक होने से सुबह-शाम ज्यादा चाय बिकती थी। हर तरह के बीमार क्लिनिक में उपचार कराने आते। दवाई लेते, चाय पीते। न जाने कितनों की बीमारी के जीवाणु खेमा के शरीर को बीधेंगे? खेमा इन सब से बेखबर अपने काम में लगा रहता। खेमा को आए लगभग दो महीने हो चुके थे। खेमा की सारी दुनिया कसारा के होटल में सिमट आई थी।

''ऐ रे खेमा.......'' कसारा ने पंखा घुमाते हुए ज़ोर से आवाज सुनाई।

''आ रहा हूँ।'' पास के जनरल स्टोर पर बैठा खेमा दौड़कर आया।

''कहाँ मर गया था, ये बर्तन क्या तेरा बाप धोएगा? कसारा ने आँखें निकालीं। कसारा के ताने सुनता खेमा बर्तन साफ करने जा बैठा।

“ऐ रे खेमा........पहले यहाँ आ के चार चाय जनरल स्टोर पर दे आ।” कसारा ने नाटकीय क्रोध में कहा।

“जा रहा हूँ।” खेमा ने शांत स्वर में कहा।

शाम होते-होते बरतनों की सफाई नहीं हुई, इस कारण खेमा की पिटाई हो गई। खेमा बाल्टी लेकर हैंडपम्प पर गया और जैसे-तैसे पानी की बाल्टी ले आया। संभवतः कसारा का खौफ़ खेमा में उत्तेजना भर देता था। ख़ौफ से बालक स्थिर होकर बैठा रहता है, परन्तु खेमा तो कसारा के ख़ौफ के आगे मशीन की तरह दौड़ता रहता है।

रात होने से पहले खेमा ने सभी बर्तनों की सफाई कर दी। कसारा और खेमा ने खाना खाया कुछ देर बाद दोनों अपने-अपने बिस्तर पर लेट गए। कसारा जाग रहा था, परन्तु खेमा को सोते ही नींद आ गई।

अगले दिन सुबह से खेमा फिर अपने काम में लग गया। उसके लिए कुछ भी नया नहीं रहा।

दो दिन से मैं खेमा का जीवन क्रम देख रहा था। इस तरह शोषण! न जाने कितने खेमा जैसे इस देश में हैं जो बचपन में ही कच्ची टहनी से स्थूल जड़ बन जाते हैं। न जाने क्यों ?

जानकारी करने पर मुझे पता चला कि खेमा के माता-पिता ने बच्चों के भरण-पोषण के दायित्व से मुक्त होने के लिए अपने चार बेटों को इसी तरह से बेच दिया है। खेमा भाइयों में सबसे छोटा था। मैंने सोचा, खेमा को कुछ समय अपने पास रखकर स्कूल में दाखिला दिलवा दूँगा।

कसारा चायपत्ती, शक्कर लेने बाज़ार गया। मुझसे रहा नहीं गया और मैंने खेमा को आवाज लगाई। खेमा टेबल पर गीला कपड़ा घुमाता छोड़ मेरे पास आ खड़ा हुआ।

“क्यों खेमा, तुझे तेरे सेठजी कितने रुपये देते हैं?” मैंने उत्सुकता से पूछा।

“मैं नहीं जानता, बापू जानते हैं।” खेमा ने हथेलियाँ घुमाते हुए स्पष्ट स्वर में कहा।

“तुम स्कूल नहीं जाते हो खेमा?” मेरे प्रश्न ने खेमा को चौंका दिया।

“मेरी तो पढ़ने की इच्छा है पर बापू स्कूल नहीं भेजते।” कहते-कहते खेमा मेरे सामने बैठ गया।

“तू तेरे सेठ के पास ख़ुश है?” मैंने पूछा। खेमा निरुत्तर रहा।

“मेरे साथ चलेगा?” मैंने दृढ़ता से कहा।

“क्या काम करना पड़ेगा?” नन्हीं जान ने मुझे निरुत्तर कर दिया।

“स्कूल जाना, पढ़ाई करना मेरे साथ रहना।” मैंने प्यार से कहा।

उसके चेहरे से प्रसन्नता झलकने लगी। मैंने दो-तीन दिन तक छानबीन करके खेमा के गाँव का पता लगाया और उसके पिता से मिलने गाँव जा पहुँचा। उसका पिता टूटी-फूटी झोंपड़ी के बाहर खाट पर बैठा था। थका-सा शरीर उदास चेहरा। मुझे देखकर उठा और हाथ जोड़ कर भय मिश्रित आश्चर्य से देखने लगा।

"आप........?" खेमा के पिता ने पूछा?

"मैं अध्यापक हूँ। खेमा को जानता हूँ।" मैंने कहा।

"वो एक होटल पर है साहब...........।" खेमा के पिता ने दीर्घ श्वास छोड़ते हुए कहा।

"मुझे मालूम है। मैं चाहता हूँ कि खेमा को पढ़ाऊँ, उसे अच्छा इंसान बनाऊँ। इसलिए खेमा को लेने आया हूँ।" मैंने सहजता से कहा।

खेमा के पिता की आँखें भर आईं। निश्चय ही उसके मन में अपने बच्चे के प्रति अनुराग उमड़ पड़ा था।

"ठीक है, पर कसारा को उसके रुपए लौटाने पड़ेंगे।" खेमा का पिता बोला।

"मैं व्यवस्था कर दूँगा।" मैंने सहजता से कहा।

उसके चेहरे पर संतोष की लकीरें उभर आयीं। वह मेरे साथ चल पड़ा।

खेमा ग्राहकों को चाय के गिलास दे रहा था। खेमा के पिता ने कसारा से बात की और लगभग आधा घण्टे बाद खेमा मेरे पास था।

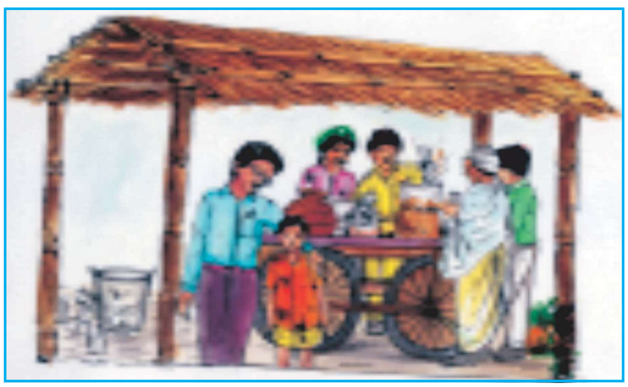

खेमा मेरे साथ चलने लगा। उसकी चाल बदल गई। जैसे पिंजरे से पंछी मुक्त हुआ हो। घर आकर मैंने स्नान किया फिर खेमा को स्नान करने के लिए कहा। दोनों ने खाना खाया।

खाना खाते समय मैं सोच रहा था कि यदि खेमा पढ़-लिखकर कुछ बन जाएगा तो मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी परन्तु खेमा जैसे अनेक बालक हैं, उनका क्या होगा? खैर.......

रात को मैं सोने लगा तो खेमा मेरे पास आया और मेरे पैर दबाने लगा। मैं उठ बैठा और पूछा कि मेरे पैर क्यों दबा रहा है, तो पता चला कि खेमा रोज रात को दो घण्टे कसारा के पाँव दबाता था। मेरी आँखें भर आयीं।

मैंने प्यार से खेमा के सिर पर हाथ फेरा। मैंने उसे बिस्तर पर सो जाने के लिए कहा। कच्ची नींद में सोया खेमा करीब दो घण्टे बाद बड़बड़ाने लगा, ''आया सेठजी।'' संभवत: कसारा की आवाज अर्द्ध निद्रावस्था में खेमा को सुनाई दी, ''ऐ रे खेमा.........।''

–संकलित

शब्दार्थ

पायदान	–	सीढ़ी, पैर रखने योग्य
पिलना	–	भिड़ जाना
अनुराग	–	प्रेम, भक्ति
आदेशात्मक	–	आदेशपूर्ण, आज्ञा
क्षणिक	–	थोड़ी देर रहने वाला
निरुत्तर	–	बिना उत्तर के
नियति	–	भाग्य, नियमन
छींका	–	चाय का गिलास रखने का जालीनुमा उपकरण

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. खेमा कसारा के होटल पर काम क्यों करता था ?
2. खेमा द्वारा चप्पल की माँग करने पर कसारा ने बेरूखी क्यों दिखाई ?
3. अपने पैरों पर पानी गिराने से खेमा को तसल्ली क्यों मिलती थी ?
4. किन परिस्थितियों में खेमा के पिता ने उसे बेच दिया था ?
5. जब लेखक ने खेमा के पिता से कहा कि वे खेमा को अपने साथ ले जाकर पढ़ाना चाहते हैं तब उसकी आँखें क्यों भर आईं ? अपना विचार दीजिए।

पाठ से आगे

1. 'खेमा' कहानी पढ़कर आपके दिमाग में कौन-कौन से प्रश्न उठ रहे हैं ?
2. कसारा से चप्पल माँगने पर खेमा को फटकार लगी उसके बाबज़ूद वह काम करने लगा ? आप रहते तो क्या करते ?
4. कसारा का होटल छोड़ने के बाद खेमा के जीवन में किस प्रकार का परिवर्तन आया होगा ? अपने विचार लिखिए।
5. बाल मज़दूरी की तरह समाज में अन्य कुप्रथाएँ भी प्रचलित हैं। उन पर चर्चा कीजिए।
6. बाल मज़दूरी समाप्त करने के लिए सुझाव दीजिए।

गतिविधि :

1. अपनी दिनचर्या की तुलना खेमा की दिनचर्या से कीजिए :

आपकी दिनचर्या	खेमा की दिनचर्या

2. **'खेमा' कहानी में आये निम्नलिखित प्रसंगों में से किसी एक पर चित्र बनाइए।**
   (क) कसारा के होटल पर काम करते हुए खेमा ।
   (ख) कसारा के पैर दबाते हुए खेमा ।
   (ग) जलते हुए अपने पैर पर पानी डालते हुए खेमा ।
3. अपने आस पड़ोस के किसी बाल मज़दूर से बात कर यह पता कीजिए कि किन कारणों से वह बाल मज़दूर बना।